राजपुत्र

फिर लगा सोचने यथासूत्र–''मैं भी होता
यदि राजपुत्र–मैं क्यों न सदा कलंक ढोता,
ये होते जितने विद्याधर मेरे अनुचर,
मेरे प्रसाद के लिए विनत–सर उद्यत कर;
मैं देता कुछ, रख अधिक, किन्तु जितने पेपर,
सम्मिलित कंठ से गाते मेरे कीर्ति अमर,
जीवन चरित्र लिख अग्रलेख अथवा छापते विशाल चित्र।
इतना भी नहीं, लक्षपति का भी यदि कुमार
होता मै, शिक्षा पाता अरब–समुद्र–पार,
देश की नीति के मेरे पिता परम पंडित,
एकाधिकार रखते भी धन पर, अविचल–चित्त
होते उग्रतर साम्यवादी, करते प्रचार,
चुनती जनता राष्ट्रपति उन्हें ही सुनिर्धार,
पैसे में दस राष्ट्रीय गीत रचकर उन पर
कुल लोग बेचते गा–गा गर्दभ–मर्दन–स्वर,

''निराला''

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

भारति जय विजय करे

भारति जय विजय करे!
कनक–शस्य–कमलधरे।
लंका पदतल शतदल,
गार्जितोर्मि सागर–जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे!
तरु–तृण–वन–लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल–कण
धवल धार हार गले।
मुकुट शुभ हिम तुषार
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख–शतरव–मुखरे!

''निराला''

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

वर्षा

श्याम गगन नव घन मंडलाए
कानन–गिरि–वन–आनन छाए।
लदे बाग आमों के परसे,
धानों के खेतों पर बरसे,
युवती निकलीं गागर कर ले,
पुरवी प्रिय को गले लगाए।
कमल ताल के जल बलखाए,
नाले उमड़–उमड़ कर आए
नद जल के मद व्याकुल धाए,
तट के नीम हिंडोले खाए।

''निराला''

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय

धर्म और अधर्म

किसी शहर में एक सेठ ने अनुचित कार्यो से बहुत सारा धन एकत्र किया था। वह रोज मंदिर जाया करता था। उसका विचार था कि यदि ईश्वर प्रसन्न हो जाएं तो सारे पाप कट जाते हैं। सेठ जिस मंदिर पर जाता वहां एक संत नियमित आते थे। वह वहाँ लोगों को धर्म व ज्ञान की बातें बताते थे। सेठ जब भी मंदिर जाता, कुछ देर बैठकर उनकी बातें जरूर सुनता। एक दिन संत ने बताया कि चीटियों को आटा खिलाने से पुण्य मिलता है। पुण्य कमाने का इतना सस्ता नुस्खा पाकर सेठ बहुत प्रसन्न हुआ। अब वह प्रतिदिन मंदिर के आसपास चीटियों के बिलों पर आटा बिखेरने लगा। उसने इतना अधिक आटा बिखेरा कि महीनेभर में चीटियों के हजारों नए बिल तैयार हो गए और इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए करोड़ों चीटियां उस क्षेत्र में जमा होने लगीं। उनकी संख्या इतनी बढ़ी कि मंदिर के आसपास रहने वाले लोग परेशान हो गए। वे इलाका छोड़कर भागने लगे। परंतु सेठ ने आटा डालना नहीं छोड़ा। जब संत को इसका पता चला तो उन्होंने सेठ को बुलाया और कहा, 'धर्म के कार्य में विवेक का भी ध्यान रखना चाहिए। यह सोचना चाहिए कि कहीं धर्म के साथ अधर्म तो नहीं हो रहा। तुमने चीटियों को तो लाभ पहुँचाया पर मनुष्यों को तकलीफ में डाल दिया। असल में तुम्हें न तो चींटियों की परवाह है न मनुष्य की। तुम्हें तो बस पुण्य बटोरना है।' सेठ संत का आशय समझ गया। उसने उस दिन से गलत कार्य छोड़ दिए।

संग्रहकर्त्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
मानकीकरण निदेशालय